बृहन्नारदीयपुराण में शिवतत्त्व

यह एक वैष्णव उपपुराण है। यह पुराण नारद एवं सनत्कुमार के संवाद से शुरू होता है। इसके वक्ता नारदजी एवं श्रोता सनत्कुमारजी हैं। इन दोनों के संवाद को ही सूतजी ने ऋषियों के समक्ष सुनाया, जिसे बृहन्नारदीय पुराण कहा गया। इसमें 38 अध्याय और लगभग 3500 श्लोक हैं। वैष्णव उपपुराण होने के बावजूद भी इसमें भगवान् शिव के माहात्म्य का स्पष्ट रूप से प्रतिपादन किया गया है। इस पुराण के अन्तर्गत नारद महापुराण की कई बातें, विशेषतया शिव-माहात्म्य संबंधी, यथावत् प्राप्त होती हैं। दूसरे शब्दों में इस पुराण पर नारद महापुराण का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

भगवान् शिव का स्वरूप

नारदजी भगवान् शिव को निर्गुण परब्रह्म बताते हुए उन्हें एक स्थल पर शुद्ध, अक्षर, अनन्त, कालरूप, महेश्वर, गुणों को धारण करनेवाला, जगत् का आदि एवं विभु कहा है।

एष शुद्धोऽक्षरोऽनन्तः कालरूपी महेश्वरः।
गुणरूपी गुणाधारी जगतामादिकृद्विभुः।। (बृहन्नारदीयपुराण 3/32)

भगवान् विष्णु एक स्थल पर शिवजी की महिमा बताते हुए उन्हें सभी प्रकार के पुरुषार्थों को प्रदान करनेवाला, अनादि तथा सभी कामनाओं को पूरा करनेवाला कहा है (बृहन्नारदीय पु. 15/74-76)।

भगवान् शिव को सभी देवताओं का स्वरूप तथा लोकों का कारण (बृहन्नारदीयपु. 15/80) बताया गया है। भगीरथ भगवान् शिव की स्तुति करते हुए उन्हें जगन्नाथ, भक्तों के दुःख को दूर करनेवाला, प्रमाणों से परे, देवों के ईश, प्रणवस्वरूप, जगत्स्वरूप, सर्ग, स्थिति एवं अन्त करनेवाला, आदि, मध्य एवं अन्त से रहित, अनन्त, अजन्मा, अव्यय, तुष्टिवर्धक, लोकेश, नीलकण्ठ, पशुपति, चैतन्य-स्वरूप, पुष्टि प्रदान करनेवाला, पापों को दूर करनेवाला, कल्याणप्रद, पिनाक, शूल, पाश, कपाल, मुद्गर, घंटा आदि को हाथों में धारण करनेवाला, पंचमुख तथा अष्टभुजावाला, नागों का यज्ञोपवीत पहननेवाला, समस्त पापों को दूर करनेवाला, प्रधान, पुरुष, स्वप्रकाश, सनातन परमज्योति, उमाकान्त, नीलकण्ठ, मृत्युञ्जय, जटाधारी, योगियों के ध्येय, स्वतंत्र, एक एवं गुणों के धाम आदि कहा है (बृहन्नारदीय पु. 15/81-96) स्तुति के कुछ अंश द्रष्टव्य हैं।

प्रणमामि जगन्नाथं प्रणतार्त्तिप्रणाशनम्।
प्रमाणागोचरं देवमीशानं प्रणवात्मकम्।।
जगद्रूपम्.....सर्गस्थित्यन्तकारणम्।
आदिमध्यान्तरहितमनन्तमजमव्ययम्।
यमामनन्ति योगीन्द्रास्तं वन्दे तुष्टिवर्द्धनम्।। (बृहन्नारदीयपुराण 15/81-83)

अर्थात्-भक्तों के दुःखों का नाश करनेवाले जगत्पति को प्रणाम। जो प्रणवस्वरूप, प्रमाणों से अगोचर तथा देवताओं के स्वामी हैं, उन्हें प्रणाम। जो जगत्स्वरूप, सृष्टि, पालन एवं प्रलय करनेवाले

हैं, आदि, मध्य अन्त से रहित, अनन्त, अजन्मा, अव्यय हैं, जिन्हें योगीन्द्र लोग मानते हैं तथा जो तुष्टि प्रदान करनेवाले हैं, उन्हें नमस्कार है।

उपरोक्त स्तुति में भगवान् शिव को ॐकारस्वरूप या प्रणवस्वरूप मानकर भगवान् शिव को परब्रह्म स्वीकार किया गया है। इस पुराण में उपनिषदों की भाँति ही ॐकार के अकार को ब्रह्मा, उकार को विष्णु, मकार को रुद्र का तथा अर्धमात्रा को परात्पर ब्रह्म अर्थात् परम शिव स्वीकार किया गया है।

अकारं ब्रह्मणोरूपमुकारं विष्णुरूपवत्।
मकारं रुद्ररूपं स्यादर्द्धमात्रा परात्मकम्।। (बृहन्नारदीयपुराण 31/158)[1]

संक्षेप में भगवान् शिव निर्गुणरूप में प्रणवस्वरूप, प्रमाणों से परे, अनन्त, सनातन तथा सबके कारण कहे गये हैं। सगुणरूप में उन्हें पाँच मुख तथा आठ भुजावाला, पिनाक, कपाल, त्रिशूल आदि आयुधों को धारण करनेवाला, सृष्टि, स्थिति, प्रलय करनेवाला, सभी देवों का ईश्वर तथा जगद्गुरु आदि कहा गया है।

शिवोपासना

इस पुराण में भगवान् शिव को सभी कामनाओं को पूरा करनेवाला (बृहन्नारदीयपु. 15/76), भक्तों के दुःखों को दूर करनेवाला (वही 15/81), पापों का नाश करनेवाला तथा कल्याण करनेवाला (**नमः कल्मषनाशाय नमो मीढुष्टमाय ते**; वही 15/85 तथा 88), समस्त प्रकार के शुभों को प्रदान करनेवाला (वही 15/95) तथा भोग एवं मोक्ष का वर देनेवाला (वही 15/102) कहा गया है। एक स्थल पर कहा गया है कि जहाँ शिव की पूजा होती है वहाँ लक्ष्मी तथा सभी देवता निवास करते हैं (बृहन्नारदीयपु. 11/6)।

शिवपूजापरो वापि.....।
यत्र तिष्ठति तत्रैव लक्ष्मीः सर्व्वाश्च देवता।।

दूसरों को कष्ट पहुँचानेवाले भूत-बेताल आदि लिंगार्चन करनेवाले सद्भक्तों से दूर भाग जाते हैं।

परपीडारता ये च भूतवेतालकादयः।
नश्यन्ति यत्र सद्भक्तो.....लिङ्गार्च्चने रतः।। (बृहन्नारदीयपुराण 11/9)

मन, वाणी एवं कर्म से जहाँ शिव की पूजा होती है वहाँ श्रीहरि भी विराजते हैं (वही 6/52)।

---

1. माण्डूक्योपनिषद् के निम्नलिखित मन्त्र से इस श्लोक की तुलना करें-
अमात्रश्चतुर्थोऽव्यवहार्यः प्रपञ्चोपशमः शिवोऽद्वैत एवमोङ्कार आत्मैव।
संविशत्यात्मनाऽऽत्मानं य एवं वेद य एवं वेद।। (माण्डू. 12)

कर्मणा मनसा वाचा यो.....भजते सदा।

शिवं वा पूजयेन्नित्यं तत्र संन्निहितो हरिः।।

भगवान् विष्णु अदिति से कहते हैं कि शिव-पूजा-परायण व्यक्ति सदा मेरे में ही निवास करता है। (वही 11/56)।

कलियुग में शिवपूजा एवं शिव के नामों का जप व्यक्ति को शिवतुल्य बना देता है तथा उसे कलि बाधा नहीं पहुँचाता(बृहन्नारदीयपु. 38/101, 109)।

शिवपूजापरा ये तु शिवनामपरायणाः।

त एव शिवतुल्याश्च घोरे कलियुगे द्विजाः।। (बृहन्नारदीयपुराण 38/101)

शिवपूजा से सभी धार्मिक कृत्य पूरे हो जाते हैं अर्थात् उनकी न्यूनता या कमी पूरी हो जाती है(वही 38/124, 131)। स्पृहारहित हो शिवपूजा करनेवाला सबको पवित्र कर देता है(वही 37/63)। भगवान् शिव का ध्यान करनेवाले को उत्तम भागवात कहा गया है(वही 5/38)। शिव का ध्यान करनेवाले को वन्दनीयों में उत्तम स्वीकार किया गया है (वही 3/61)।

गुरुभक्तः शिवध्यानी आश्रमाचारतत्परः।

अनसूयः सदा शान्तः स वन्द्योऽस्माभिरुत्तमः।। (बृहन्नारदीयपुराण 3/61)

अर्थात्-गुरुभक्त, शिवध्यानी, आश्रम के आचार में तत्पर, शान्त तथा अनसूयाव्रतधारक वन्दनीयों में श्रेष्ठ हैं।

भक्तिपूर्वक दक्षिणा के साथ महादेव का यजन करनेवाले को उत्तम भागवत अर्थात् भगवान् का भक्त कहा गया है(वही 5/55)। भगवान् शिव की उपासना का निर्देश देते समय विष्णुजी भगीरथ से कहते हैं कि वे स्वयं भगवान् शिव की उपासना करते हैं(वृहन्नारदीयपु. 15/75)।

अहमप्यद्रिजानाथं यजामि प्रत्यहं नृप।

तस्मादाराधयेशानं स्तोत्रैः स्तुत्यं सुखप्रदम्।। (बृहन्नारदीयपुराण 15/75)

अर्थात् - हे राजा(भगीरथ) मैं(विष्णु) भी गिरिजानाथ के प्रति यजन करता हूँ। अतः तुम भी ईशान की स्तोत्रों द्वारा आराधना कर सुख प्राप्त करो।

भगवान् विष्णु मार्कण्डेयजी से भागवत(भगवान् के भक्त) के लक्षणों को बताते हुए कहते हैं कि-

शिवप्रियाः शिवासक्ताः शिवपादार्च्चने रताः।

त्रिपुण्ड्रधारिणो ये च ते वै भागवतोत्तमाः।। (बृहन्नारदीयपुराण 5/53)

अर्थात्-शिव के प्रेम में आसक्त तथा उनकी पूजा में रत त्रिपुण्ड्रधारी व्यक्ति भागवतों में उत्तम है।

उपरोक्त उद्धरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि शिव की उपासना भोग-मोक्ष प्रदान करने के

साथ-साथ कलियुग के दोषों से मुक्त करनेवाली है। शिव की उपासना इतनी महत्त्वपूर्ण है कि भगवान् विष्णु भी उनकी उपासना करते हैं। शिव की उपासना से वैष्णवों को विष्णु की भी प्राप्ति हो जाती है। वास्तव में शिव की पूजा से सभी देवों की पूजा सम्पन्न हो जाती है तथा तत्-तत् देवों के उपासकों को उनके इष्ट की प्राप्ति भी हो जाती है। क्योंकि शिवजी को सभी देवों का स्वरूप बताया गया है। शिव के उपासक को श्रेष्ठ भागवत अर्थात् भगवद्भक्त एवं पूजनीयों में श्रेष्ठ बताया गया है।

(1) शिवनाम महिमा

सभी धार्मिक ग्रन्थों की भाँति इस पुराण में भी नाम-जप के माहात्म्य को स्वीकार करते हुए शिवनाम की महिमा का प्रतिपादन किया गया है। कहा गया है कि जप से देवता (इष्ट) प्रसन्न हो जाते हैं (बृहन्नारदीय पु. 31/97)। शिवनाम के सन्दर्भ में कहा गया है कि-

शिवपूजापरा ये तु शिवनामपरायणाः।

.....।। (बृहन्नारदीय पुराण 38/101)

अर्थात्-इस घोर कलियुग में शिवपूजापरायण वा शिवनामपरायण व्यक्ति को शिवतुल्य समझना चाहिये।

आगे कहा गया है कि शिव, शंकर, रुद्र, ईश, नीलकण्ठ तथा त्रिलोचन आदि शब्दों के उच्चारण करनेवाले को कलि बाधा नहीं पहुँचाता। इसी प्रकार महादेव, विरूपाक्ष, गंगाधर, मृड, अव्यय आदि कहनेवाला निःसंदेहरूप से कृतार्थ हो जाता है। भावार्थ यह है कि शिवजी के नामों का जापक कलिदोषों से छूटकर अपने जीवन के लक्ष्य को पूरा कर लेता है।

शिव शङ्कर रुद्रेश नीलकण्ठ त्रिलोचन।
इतीरयन्ति ये नित्यं न हि तान् बाधते कलिः।।
महादेव विरूपाक्ष गङ्गाधर मृडाऽव्यय।
इतीरयन्ति ये नित्यं ते कृतार्था न संशय।। (बृहन्नारदीयपु. 38/109-110)

शिव के नामों का जप करने से सभी प्रकार के धार्मिक कृत्यों की पूर्णता सम्पन्न हो जाती है। अर्थात् धार्मिक कर्म की न्यूनता की पूर्ति के लिये शिव के नामों का जप करना चाहिये। (वही 38/124)

एक स्थल पर नारदजी कहते हैं कि जो शिव, नीलकण्ठ तथा शंकर का सदा उच्चारण करता है, वह वन्दनीयों में श्रेष्ठ है।

शिवेति नीलकण्ठेति शङ्करेति च यो ब्रुवन्।
सर्वभूतहितो नित्यं स वन्द्योऽस्माभिरुत्तमः।। (बृहन्नारदीयपु. 3/60)

भगवान् शिव के नामों का जप करनेवाले रुद्राक्षधारी व्यक्ति को भी उत्तम भागवत बताया

गया है (वही 5/54)। आगे बताया गया है कि शिवाग्नि के कार्य में रत, पंचाक्षरमन्त्र का जप करनेवाला तथा शिव का ध्यान करनेवाला उत्तम भागवत है।

शिवाग्निकार्य्यनिरताः पञ्चाक्षरजपेरताः।
शिवध्यानरता ये च ते वै भागवतोत्तमाः।। (बृहन्नारदीयपु. 5/58)

मन्त्रों के जप तीन प्रकार के बताये गये हैं – वाचिक, उपांशु तथा मानस। ये तीनों उत्तरोत्तर एक दूसरे से श्रेष्ठ हैं। इस पुराण में इन सभी प्रकार के जपों के स्वरूप को बताते हुए इनके फलों को समझाया गया है। वाचिक जप से समस्त यज्ञों का फल प्राप्त होता है। उपांशु जप से वाचिक का दुगना फल प्राप्त होता है तथा मानसिक जप से, जिसमें मन्त्रार्थ का भी विचार किया जाता है, योग में सिद्धि प्राप्त होती है (वही 31/93 – 96)।

(2) लिंगार्चन

भगवान् शिव की सगुण पूजा मूलतः लिंगपूजा ही होती है। इस पुराण में विविध प्रकार से की गयी लिंगपूजा के फलों को बताते हुए कहा गया है कि लिंग को कृष्णपक्ष की चतुर्दशी तथा सोमवार को दुग्ध द्वारा स्नान कराने पर व्यक्ति को शिवसायुज्य की प्राप्ति होती है। अष्टमी तथा सोमवार को भक्तिपूर्वक नारियल के जल से लिंगस्नान कराने पर भी व्यक्ति शिव – सायुज्य प्राप्त कर लेता है। इसी प्रकार कृष्णपक्ष की चतुर्दशी तथा अष्टमी को घृत एवं मधु से स्नान करानेवाला भी शिव – सायुज्य प्राप्त करता है। सोमवार को पुष्प – जल या फल के जल से स्नान करानेवाला सौ कल्पोंतक स्वर्ग में निवास करता है। तिल के तेल से स्नान कराने पर तीन पीढ़ियों के साथ शिव – सारूप्य की प्राप्ति होती है। गन्ने के रस से लिंग को स्नान कराने पर अपने कुल के साथ सौ करोड़ कल्पोंतक शिवलोक में निवास का अवसर प्राप्त होता है। द्वादशी के दिन घी एवं दूध से स्नान करानेवाला दस हजार जन्मों के पापों को धो डालता है तथा अपने करोड़ों कुल के लोगों के साथ शिवसायुज्य को प्राप्त करता है। (बृहन्नारदीयपु. 13/84 – 91)

घृतेन स्नापयेलिङ्गं पुण्यवान् द्वादशीदिने।
क्षीरेण वा महाभाग तत्फलं वदतः शृणु।।
जन्मायुताज्जितैः पापैर्विमुक्तो मनुजोत्तमः।
कुलकोटिसमायुक्तः शिव सायुज्यमाप्नुयात्।। (बृहन्नारदीयपु. 13/90 – 91)

कमल के फूलों से शिव की पूजा करनेवाला अपनी तीन पीढ़ियों के साथ विष्णुलोक को जाता है। रात्रि के समय धतूर के फूलों से शिव की पूजा करनेवाला सभी पापों से मुक्त हो युगोंतक विष्णुलोक में निवास करता है। आक के फूलों से पूजा करनेवाला शिवसारूप्य को प्राप्त करता है। जातिपुष्प से पूजा करने पर पापों से मुक्ति तथा रुद्र – पुष्प से शिव – सारूप्य की प्राप्ति होती है। शमी तथा मनोहर फूलों से पूजा करने पर सभी कामनाओं की पूर्ति तथा अपामार्ग से, विशेषतया चतुर्दशी के दिन, पूजा करने पर शिवसायुज्य की प्राप्ति होती है। (वही 13/96 – 103)

अपामार्गदलैर्यस्तु पूजयेद्गिरिजापतिम्।
स याति शिवसायुज्यं चतुर्दृश्यां विशेषतः।। (बृहन्नारदीयपु. 13/102)

घृतयुक्त गुग्गुल का धूप भगवान् शिव को भक्तिपूर्वक समर्पित करनेवाला सभी पापों से छूट जाता है। तिल के तेल का दीप शंकरजी को समर्पित करने पर सभी कामनायें पूरी होती हैं। घृत के दीप से व्यक्ति सभी पापों से छूट जाता है तथा उसे गंगास्नान का फल प्राप्त होता है। (वही 13/103-105)।

भगवान् शिव को अखण्ड दीप समर्पित करनेवाला प्रतिदिन अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त करता है (वही 13/182)। लिंग की विधिपूर्वक एक बार दक्षिणावर्त या वामवर्त प्रदक्षिणा करने पर ब्रह्महत्या के पापों से मुक्ति, दो बार करने से राज्य की प्राप्ति तथा तीसरी बार परिक्रमा करने से चन्द्रमा का साम्राज्य प्राप्त हो जाता है। परन्तु प्रदक्षिणा करते समय सोमसूत्र (अर्थात् लिंग पर चढ़ाये हुए जल आदि को बाहर ले जानेवाली नाली) का उल्लंघन नहीं करना चाहिये।[1]

शिवं प्रदक्षिणं कृत्वा सव्यासव्यविधानतः।
यत् फलं समवाप्नोति तन्मे निगदतः शृणु।।
राजन् प्रदक्षिणैकेन मुच्यते ब्रह्महत्यया।
द्वितीयेनाधिराजत्वं तृतीयेनेन्दुसम्पदम्।।
शिवप्रदक्षिणे मर्त्यः सोमसूत्रं न लङ्घयेत्। (बृहन्नारदीयपु. 13/186-188)

निर्जन स्थान जहाँपर पूजा न होती हो वहाँपर स्थित शिवलिंग पर चुल्लु भर जल चढ़ानेवाला लाखों अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त कर लेता है। पत्र-पुष्प से उपरोक्त लिंग की पूजा से करोड़ों अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है। इसी प्रकार भक्ष्य-भोज्य पदार्थ तथा फलों से पूजा करने पर शिवसायुज्य की प्राप्ति होती है (बृहन्नारदीयपु. 13/162-165)।

शिवलिंग की पूजा करने का फल तो होता ही है, इसके दान का भी बहुत बड़ा फल बताया गया है। कहा गया है कि करोड़ों ब्रह्माण्ड के दान का जो फल प्राप्त होता है वह फल शिवलिंग के दान से प्राप्त हो जाता है।

ब्रह्माण्डकोटिदानेन यत् फलं लभते नरः।
तत् फलं समवाप्नोति शिवलिङ्ग प्रदानतः।। (बृहन्नारदीयपु. 13/146)

(3) शिवोपासना संबंधी अन्य बातें

भगीरथ से धर्मराज शिवमंदिर बनवाने की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि इसे बनानेवाला मातृ एवं पितृ कुल के करोड़ों लोगों को तार देता है परन्तु उससे पहले वे तीन कल्पोंतक विष्णुलोक में सुख भोगते हैं (बृहन्नारदीयपु. 13/40-41)।

1. नाली के ढके होने पर उसका उल्लंघन हो सकता है।

इसी प्रकार जीर्ण–शीर्ण शिव–मंदिर के परिष्कार के फल को बताते हुए धर्मराज कहते हैं कि इससे सैकड़ों जन्मों के अर्जित पाप नष्ट हो जाते हैं तथा तीन पीढ़ियों के व्यक्तियों का एक कल्पतक विष्णुलोक में रहने के पश्चात् मोक्ष हो जाता है।

शीर्णस्पुटितसन्धानं यः करोति नरोत्तमः।
शिवस्यायतने.....शृणु तत्फलम्।।
शतजन्मार्जितैः पापैर्मुक्तो वंशत्रयाऽन्वितः।
स्थित्वा विष्णुपुरे कल्पं तत्रैव परिमुच्यते।। (बृहन्नारदीयपु. 13/170–171)

कार्तिक एवं आषाढ़ तथा पूर्णिमा को शिवजी की प्रसन्नता हेतु वृषोत्सर्ग करनेवाला अपने सात जन्मों के पापों से छूटकर सात पीढ़ियों के लोगों के साथ रुद्ररूप धारण कर अन्य रुद्रों के साथ सुख भोगता है। इसी प्रकार शिवलिंग से अंकित महिष का उत्सर्ग करनेवाला यमलोक का दर्शन नहीं करता।

कार्त्तिक्यां पौर्णमास्यां वा आषाढ्यां वाऽपि भूपते।
वृषभं शिवतुष्ट्यर्थमुत्सृजेत्तत्फलं शृणु।।
सप्तजन्मार्जितैः पापैर्विमुक्तो रुद्ररूपधृक्।
कुलसप्ततिसंयुक्तो रुद्रेण सह मोदते।।
शिवलिङ्गाङ्कितं कृत्वा महिषं यः समुत्सृजेत्।
न तस्य यातनालोकदर्शनं भवति प्रभो।। (बृहन्नारदीयपु. 13/135–137)

इसी प्रकार गायों को घास प्रदान करनेवाला उत्तम रुद्रलोक को प्राप्त करता है।

गवां तृणप्रदानेन रुद्रलोकमनुत्तमम्। (बृहन्नारदीयपु. 13/153)

श्राद्ध में अनेक कुपात्र लोगों के साथ–साथ शिवभक्ति विहीन को भी भोजन के लिये निमन्त्रण नहीं देना चाहिये (बृहन्नारदीयपु. 26/15)।

अन्य ग्रन्थों की भाँति इस पुराण में भी वाराणसी को उत्तम तीर्थ एवं क्षेत्र स्वीकार किया गया है। सभी देवताओं द्वारा इस तीर्थ का सेवन किया जाता है।

तीर्थानामुत्तमं तीर्थं क्षेत्रणाञ्च तथोत्तमम्।
वाराणसीति विख्यातं सर्व्वदेवनिषेवितम्।। (बृहन्नारदीयपु. 6/37)

काशी में स्थित विश्वेश्वर लिंग को ज्योतिर्लिंग कहा जाता है। इसके दर्शन से परम ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। वाराणसी में स्थित मिट्टी, पत्थर तथा लकड़ी आदि से निर्मित अथवा चित्रित भगवान् शिव की मूर्ति अथवा चित्र में श्रीहरि भी विद्यमान रहते हैं।

काशीविश्वेश्वरं लिङ्गं ज्येतिर्लिङ्गं तदुच्यते।
तं दृष्ट्वा परमं ज्योतिराप्नोति मनुजोत्तमः।।

शिलामृद्दारुपाषाणलेख्यजा मूर्तिरुत्तमा।

शिवस्याऽप्यच्युतस्याऽपि तत्र सन्निहितो हरिः।। (बृहन्नारदीयपु. 6/48-49)

यद्यपि तीर्थों एंव क्षेत्रों में काशी को उत्तम माना गया है परन्तु इस पुराण में यह भी कहा गया है कि तीर्थादि का फल आचारवान् को ही प्राप्त होता है।

पुण्यक्षेत्राभिगमनं पुण्यतीर्थनिषेवनम्।

यज्ञो वा विविधो ब्रह्मन्त्यक्ताचारं न रक्षति।। (बृहन्नारदीयपु. 4/26)

इस पुराण में वर्णित भगीरथ के स्तोत्र का तीनों सन्ध्यायों में पाठ करनेवाला अपनी सभी कामनाओं को पूरा कर लेता है। इस स्तोत्र की जानकारी के इच्छुक पाठक इस पुराण के अध्याय 15 (श्लोक 81-99) को देखें।

सत्यवान् एवं निरहंकारी व्यक्ति भगवान् शिव का प्रिय होता है।

सत्यवान्निरहङ्कारस्तस्य प्रीत उमापतिः।। (बृहन्नारदीयपु. 32/20)

शिवनिन्दक की गति न तो इस लोक में और न परलोक में ही होती है। इस तथ्य का स्पष्टीकरण इस पुराण में किया गया है (बृहन्नारदीयपु. 14/68)।

शिवनिन्दापराणाञ्च.....।

.....नेहाऽमुत्र च निष्कृतिः।।

त्रिदेवों की एकता

सभी प्रमुख ग्रन्थों में तीनों प्रमुख देवों की तात्त्विक एकता का प्रतिपादन किया गया है। इस पुराण में भी जगह-जगह बल देकर इनकी एकता को प्रतिपादित किया गया है।

एक स्थल पर कहा गया है कि परात्पर निर्गुण तत्त्व ही गुणों को धारणकर ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव के रूप में भिन्न-भिन्न प्रतीत होता है। गुणों अथवा उपाधिभेद से वही सनातन तत्त्व जगत् की सृष्टि, पालन तथा संहाररूपी कार्य करता है(बृहन्नारदीयपु. 29/70-72, 3/2-4, 24 आदि)।

इस पुराण में अनेक स्थलों पर शिव एवं विष्णु में तादात्म्य अर्थात् (एकरूपता) का प्रतिपादन किया गया है। इन दोनों देवों में भेदबुद्धि रखनेवाले की निन्दा तथा अभेदबुद्धिवाले की प्रशंसा की गयी है।

अभेददर्शी देवेशे नारायणशिवात्मके।

सवन्द्यो ब्राह्मणो नित्यमस्माभिः किमु सत्तमः।। (बृहन्नारदीयपु. 3/63)

भागवत के लक्षणों को बताते हुए एक स्थल पर कहा गया है कि-

शिवे च परमेशे च विष्णौ च परमात्मनि।

समबुद्ध्या प्रवर्त्तन्ते ते वै भागवताः स्मृताः।। (बृहन्नारदीयपु. 5/57)

भावार्थ यह है कि भागवत वही है जिसकी बुद्धि में शिव एवं विष्णु में भेद का अभाव है।

एक स्थल पर कहा गया है कि श्रीहरि ही लिंग का रूप धारण करते हैं तथा लिंग(शिव) ही श्रीहरि का रूप धारण करता है। ईश एवं हरि में कोई अन्तर नहीं है, भेद करने पर पाप लगता है। अनादि परात्पर देव (निर्गुणतत्त्व) की ही हरि एवं शंकर दोनों संज्ञायें हैं (अर्थात् उस निर्गुणतत्त्व को ही कोई श्रीहरि और कोई सदाशिव अथवा शंकर कहता है)। अज्ञान के सागर में डूबे पापी व्यक्ति ही इनमें भेद करते हैं। जो देव जगदीश एवं कारणों के कारण हैं वे ही अव्यय रुद्ररूप धारण करते हैं। रुद्र ही विष्णुरूप में समस्त जगत् का पालन करते हैं तथा ब्रह्मा के रूप में सृष्टि करते हैं तथा वे ही स्वयं श्रीहरि हैं। हरि, शंकर एवं ब्रह्मा के बीच जो भेद करते हैं वे चन्द्रमा एवं ताराओं के बने रहनेतक नरक भोगते हैं। तथा जो इनमें अभेद का दर्शन करते हैं वे परमानन्द को प्राप्त करते हैं–ऐसा शास्त्रों का निर्णय है।

हरिरूपधरं लिङ्गं लिङ्गरूपधरो हरिः।
ईषदप्यन्तरं नास्ति भेदकृत्पापमश्नुते।।
अनादिनिधने देवे हरिशङ्करसंज्ञिते।
अज्ञानसागरे मग्ना भेदं कुर्व्वन्ति पापिनः।।
यो देवो जगतामीशः कारणानाञ्च कारणम्।
युगान्ते जगदत्त्येतद्रुद्ररूपधरोऽव्ययः।।
रुद्रो वै विष्णुरूपेण पालयत्यखिलं जगत्।
ब्रह्मरूपेण सृजति तदत्त्येव स्वयं हरिः।।
हरिशङ्करयोर्मध्ये ब्रह्मणश्चाऽपि यो नरः।
भेदकृन्नरंक भुङ्क्ते यावदाचन्द्रतारकम्।।
हरं हरिं विधातारं यः पश्येदेकरूपिणम्।
स याति परमानन्दं शास्त्राणामेष निर्णयः।। (बृहन्नारदीयपु. 6/41-46)

भगवान् विष्णु भगीरथ को शिवपूजा के लिये प्रेरित करने हेतु उन्हें समझाते हुए कहते हैं कि भगवान् शिव मेरी ही दूसरी मूर्ति हैं अतः अपनी सामर्थ्यानुसार स्तोत्रों से शिव का यजन अर्थात् पूजन करो।

मम मूर्त्यन्तरं शम्भुं यज स्तोत्रैः स्वशक्तितः। (बृहन्नारदीयपु. 15/74)

अदिति भगवान् विष्णु की स्तुति में कहती हैं कि महादेवजी हरिरूप हैं तथा जनार्दन ही शिवरूप हैं। वे ही जगत्पति तथा जगद्गुरु हैं।

हरिरूपी महादेवः शिवरूपी जनार्दनः।।
इति लोकस्य ते नाथ नताऽस्मि जगतां गुरुम्।। (बृहन्नारदीयपु. 11/30)

उपरोक्त सभी उद्धरणों से त्रिदेवों की तात्त्विक एकता सिद्ध होती है। भगवान् शिव एवं विष्णु में तादात्म्य होने के कारण ही शिवोपासक वैष्णव को विष्णुलोक की प्राप्ति होती है। तथा शिव की

प्रतिमाओं अथवा चित्र में भगवान् विष्णु भी निवास करते हैं (वही 11/56, 6/49, 52)।

उपसंहार

इस वैष्णव उपपुराण में 38 अध्याय तथा लगभग 3500 श्लोक हैं। इसमें नारद महापुराण की कई बातें बिना किसी परिवर्तन के पायी जाती हैं। भगवान् शिव को परात्पर निर्गुण ब्रह्म स्वीकार करते हुए कहा गया है कि वे ही सगुणरूप धारण कर जगत् की सृष्टि, स्थिति एवं लय के हेतु बनते हैं। अर्थात् वे ही अनेक नाम-रूप धारण करते हैं। निर्गुणरूप में उन्हें प्रमाणों से परे, प्रणवस्वरूप, अनन्त, सनातन तथा सबका कारण कहा गया है। सगुणरूप में उन्हें ब्रह्मा, विष्णु एवं रुद्रस्वरूप, पंचमुखी, अष्ट भुजावाले, पिनाक, त्रिशूल, कपाल आदि को धारण करनेवाले, चन्द्रमा तथा नागों के यज्ञोपवीत को धारण करनेवाले, सभी देवों के ईश्वर, जगद्गुरु, भोग एवं मोक्ष प्रदान करनेवाले आदि-आदि कहा गया है।

चूँकि भगवान् शिव भोग-मोक्षदाता, पापों का नाश करनेवाले, समस्त शुभों को प्रदान करनेवाले तथा विष्णु आदि देवों द्वारा पूज्य हैं अतः उनकी उपासना सभी को करनी चाहिये। लिंगार्चन अथवा शिवपूजा से वैष्णवजनों को विष्णुलोक की तथा अन्यों को शिवलोक की प्राप्ति होती है। चूँकि भगवान् शिव सभी देवों के स्वरूप हैं अतः उनकी पूजा से सभी देवों की पूजा सम्पन्न हो जाती है। अर्थात् उन-उन की पूजा का फल उपासक को प्राप्त हो जाता है। कलियुग में शिवपूजा एवं शिवनामजप की विशेष महिमा बतायी गयी है। शिव के नामों का जप करनेवाला कलि के दोषों से मुक्त हो जाता है तथा वह शिवसायुज्य को प्राप्त कर लेता है।

इस पुराण में विभिन्न प्रकार से की जानेवाली शिवलिंग की पूजा के फलों को भी बताया गया है। पंचाक्षर मन्त्र का जप करनेवाला उत्तम भागवत कहा गया है। त्रिपुण्ड्र एवं रुद्राक्ष धारण कर शिव की आराधना करनेवाले को भी उत्तम भागवत कहा गया है। लिंगपूजा के अतिरिक्त लिंग के दान का भी अत्यधिक फल बताया गया है। इसके दान का फल करोड़ों ब्रह्माण्ड के दान के फल के बराबर होता है।

श्राद्ध में शिवभक्तिविहिन को भी भोजन के लिये निमन्त्रण नहीं देना चाहिये। वाराणसी को उत्तम तीर्थ तथा क्षेत्र स्वीकार किया गया है। परन्तु किसी तीर्थ या क्षेत्र के सेवन का फल, आचारवान् को ही प्राप्त होता है, आचारविहीन को नहीं।

इस पुराण में तीनों देवों की एकता का भी प्रतिपादन सशक्तरूप से किया गया है। निर्गुण शिवतत्त्व ही सृष्टिकार्य हेतु अपने को त्रिदेवों के रूप में प्रकट करता है। निर्गुण शिवतत्त्व को कोई शिव तो कोई विष्णु कहता है। क्योंकि जो शिव है वही विष्णु है। जो इन दोनों में भेद करता है वह चन्द्र तथा तारागण की आयुपर्यन्त नरक में वास करता है तथा वह अज्ञानी है। जो इनमें अभेद को देखता है वह परमानन्द को प्राप्त करता है-ऐसा शास्त्रों का निर्णय है। अतः अभेदबुद्धि से ही तीनों देवों की उपासना करनी चाहिये।

(यह लेख चौखम्बा अमरभारती, वाराणसी द्वारा 1975 में प्रकाशित 'बृहन्नारदीयपुराणम्' जो पं. हृषीकेश शास्त्री द्वारा संपादित है, की प्रति पर आधारित है।)